International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 794-799 www.ijhssm.org

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत योग शिक्षा, नैतिक शिक्षा एवं भारतीय ज्ञान परम्परा की संकल्पना का विश्लेषणात्मक अध्ययन

An Analytical Study of the Conception of Yoga Education, Moral Education And Indian Knowledge System Under NEP : 2020

अनीता मौर्या[1]सागर सिंह सिरोला[2]

[1] अध्यापक प्रशिक्षिका, शिक्षकशिक्षाविभाग, सरस्वती इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेन्टएंडटेक्नोलॉजी रुद्रपुर, ऊधम सिंह नगर,कुमाऊँ विश्वविद्यालयनैनीताल (263001) उत्तराखण्ड।

[2]शोध अध्येता, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा,शिक्षकशिक्षाविभाग, लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्दूचौड़, कुमाऊँ विश्वविद्यालयनैनीताल (263001) उत्तराखण्ड/

Date of Submission: 20-07-2024 Date of Acceptance: 03-08-2024

शोध सारांशिका

किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधारभूत स्तम्भ शिक्षा है। शिक्षा के द्वारा ही किसी भी राष्ट्र की सभ्यता एवंसंस्कृति में परिवर्तन लाया जा सकता है।परिवर्तनशील समाज के साथ-साथ शिक्षा में भी परिवर्तन आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा के द्वाराही भावी पीढ़ी का सर्वांगीण व सन्तुलित विकास किया जा सकता है।स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त भारतीय शिक्षा संरचना में आधारभूत परिवर्तन किया जाना चाहिए, इसकी आवश्यकता तत्कालीन समय के शिक्षाशास्त्रियों एवं समाज सुधारकों ने अनुभव की। इस क्रम में स्वतन्त्र भारत के अन्तर्गत समय-समय पर तत्कालीन आवश्यकताओं के अनुरूप अनेक शिक्षा नीतियों का प्रादुर्भाव हुआ। इसी श्रृंखला में ज्ञान के अनुशीलन में गुणवत्तायुक्त शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को प्रस्तुत किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 बदलते वैश्विक परिदृश्य में ज्ञान आधारित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भारतीय सन्दर्भ में प्रस्तुत की गयी है, जिसका प्रमुख लक्ष्य भारतीय परम्परा एवं सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर शिक्षा संरचना को सुदृढ़ करना है। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुपालन की अनुसंशा व्यक्त की गयी है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने न केवल प्राचीन भारतीय गौरवशाली शिक्षा प्रणाली को मान्यता प्रदान की है अपितु प्राचीन भारतीय विद्वानों के विचारों एवं कार्यों को भी वर्तमान पाठ्यचर्या में सम्मिलित करने हेतु शिक्षा से सम्बन्धित प्रत्येक नागरिक का ध्यान आकृष्ट किया है। प्रस्तुत शोधालेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आलोक में योग शिक्षा, नैतिक शिक्षा एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के सम्प्रत्ययों की विवेचना पर आधारित है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन एवं प्रभावी अनुपालन के सम्भावित परिणामों की परिचर्चा करता है।

संकेताक्षर- शिक्षा, योग शिक्षा, नैतिक शिक्षा, ज्ञानपरम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 वर्तमान कार्यान्वित भारतीय शिक्षा नीति का नाम है, जिसे भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई वर्ष 2020 को घोषित किया गया था। वर्ष 1986 की नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उपरान्त भारत

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 794-799 www.ijhssm.org

सरकार की शिक्षा नीति में 34 वर्षों के उपरान्त किया गया यह शैक्षिक परिमार्जन है। यह शिक्षा नीति भारतवर्ष के प्रख्यात अंतरिक्ष वैज्ञानिक के0 कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है। यह सम्पूर्ण शिक्षा नीति 27 अध्याय एवं 4 वर्गों में विभक्त की गयी है। इसके अन्तर्गत मूल रूप से बुनियादी साक्षरता एवं भारतीय ज्ञान निधि के अध्ययन पर बल प्रदान करते हुए शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों को प्राप्त करने की अनुशंसा व्यक्त की गयी है। इस नीति द्वारा अब 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' का नाम पुनः से 'शिक्षा मंत्रालय' करने का निर्णय लिया गया है। इसमें समस्त उच्च शिक्षा (विधि एवं चिकित्सकीय शिक्षा को छोड़कर) हेतु एक एकल निकाय के रूप में 'भारतीय उच्च शिक्षा आयोग' का गठन करने का प्रावधान है। वर्ष 1986 की नयी शिक्षा नीति की भांति ही इसमें भी शिक्षा तंत्र पर सकल घरेलू उत्पाद का कुल 6% व्यय करने का लक्ष्य रखा गया है, जो कि वर्तमान समय में 4.43% है। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रावधान द्वारा गुणवत्ता आश्वासन को ध्यान में रखते हुए एम0फिल0 पाठ्यक्रम को अब समाप्त कर दिया गया है तथा विद्यालयी शिक्षा के 10+2 प्रारूप के स्थान पर 5+3+3+4 के प्रारूप को अपनाने की संस्तुति व्यक्ति की गयी है। इसमें शिक्षकों के व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान के सन्दर्भ में विविध नवाचार हेतु राष्ट्रीय अनवेक्षण संस्थान की स्थापना की बात कही गयी है। इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 केअन्तर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन-अध्यापन में भी विशेष बल दिया गया है।राष्ट्रीयशिक्षानीति-2020 भारतकेसनातनज्ञानएवंविचारोंकेसमृद्धआलोकमेंनिर्मित कीगयीहै।इसकेआधारभूतस्तम्भोंमेंभारतीयज्ञानपरम्परा कोभीकेन्द्रीय स्तम्भमानागयाहै। इसदिशामें नयी पीढ़ी को भारतीय ज्ञान परम्परा से जोड़ने केलिएविश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अभिनव पहल की है। इसके अन्तर्गतप्रत्येकअनुशासनविषयकीपाठ्यचर्यामेंभारतीय ज्ञानपरम्परासेसम्बन्धितऐसेसम्प्रत्ययोंकोजोड़ाजारहाहै जिनकेअध्ययनद्वारानिश्चितरूपसेनयीपीढ़ीकेविद्यार्थियोंमेंभारतीयहोनेकागौरवबोधजागृतहोगा।[1]

भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत 'विद्या' एवं 'शिक्षा' की संकल्पना

प्राचीन भारतीय दार्शनिक ग्रन्थों के अन्तर्गत'विद्या' एवं 'शिक्षा' के मध्य सूक्ष्म अन्तर को सुस्पष्ट किया गया है। भारतीय ज्ञान परम्परामें विद्या का प्रत्यय व स्वरूप अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक है। इसके अनुसार, विद्या का वह स्वरूप जो आत्म विकास, चरित्र निर्माण और जीवन जीने की कला सिखाने में सहायक हैतथा जिसमें समस्त कौशलों का समावेशन रहता है, वह विद्या है। यह गुरु की कृपा द्वारा ही अर्जित की जा सकती है। इसके मुख्यतः दो प्रकार होते हैं, प्रथम- परा विद्या एवं द्वितीय- अपरा विद्या। परा विद्या से तात्पर्य स्वयं को जानने अर्थात आत्मबोध या परम सत्य को जानने से है तथा अपरा विद्या का अर्थ सांसारिक ज्ञान अर्थात लौकिक ज्ञान के अर्जन करने से है।

वहीं शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा के'शिक्ष्' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से व्युत्पन्न हुआ है। 'शिक्ष्' का अर्थ होता है- सीखना एवं सीखना। इस प्रकार 'शिक्षा' शब्द का शाब्दिक अर्थ हुआ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया। शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली एक सतत प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए सामाजीकृत करती है एवं समाज के सदस्य के रूप में एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए उसे आवश्यक ज्ञान व कौशल उपलब्ध कराती है। व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली उद्देश्यपूर्ण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास करकेउसके ज्ञान व कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। इस प्रकार शिक्षा उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाने में सहायता करती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत योग शिक्षा का स्थान एवं महत्व

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 794-799 www.ijhssm.org

योग का शाब्दिक अर्थ है जोड़ना अर्थात वृद्धि करना या संगठित करना।भारत में नहीं विश्व में योग को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है योग के माध्यम से पूरे विश्व के कल्याण की कामना कर सकते हैं योग के माध्यम से विचारों में संतुलन और शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को स्वस्थ बनाया जा सकता है। योग के माध्यम से कई प्रकार की सिद्धियां प्राप्त की जा सकती है। भारतवर्ष में योग की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। इसकी उत्पत्ति हजारों वर्ष पहले हुई थी। ऐसी मान्यता है कि जब से सभ्यता प्रारंभ हुई तभी से योग प्रचलन में आया। ऐसा माना जाता है कि योग का जन्म काफी समय पहले से ही हुआ है। योग विद्या में शिव को "आदि योगी" तथा "आदि गुरु" माना जाता है। भगवान शंकर के बाद वैदिक ऋषि, मुनियों और कृष्ण को महावीर और बुद्ध इस तरह से योग का विस्तार दिया। सिद्धपंथ, शैवपंथ, नाथपंथ, वैष्णव और शक्ति पंथियों ने अपने-अपने को विस्तार दिया। 600-800 ई0सा0 तकवेदों में योग का अर्थ इंद्रियों को नियंत्रण करना परिभाषित किया गया है। योग के अध्याय का उल्लेख ऋग्वेद और उपनिषदों में मिलता है। ऋग्वेद में योग विषयक का वर्णन मिलता है जो कि विश्व का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ है योग का मूल वेदों को माना जाता है योग के माध्यम से सार्वभौमिक चेतना का मिलन व्यक्तिगत चेतना से कराता है। जिससे मन और शरीर का मानव और प्रकृति के बीच एक पूर्ण तालमेल बैठाता है। श्रीमद्भगवद्गीता के साथ-साथ विभिन्न भारतीय ग्रन्थोंमें विभिन्न संदर्भों में योग को सुस्पष्ट किया गया है, जिसका विवरण क्रमशः इस प्रकार से है-

।।योगस्थःकुरूकर्माणिः संग त्व्यक्त्वा धनञ्जय ।।

।। सिद्धसिद्धयोःसमोभूत्वासमत्वं योग उच्यते

।।(श्रीमद्भगवद्गीता-02/48)

अर्थात् आसक्ति का त्याग करके, सुख-दुःख, मान-अपमानएवंसिद्धि-असिद्धि आदि विरोधी भावोंसमान रहने को ही योग कहा है। अतः सुख में न अधिक प्रसन्न होना और दुःख में न अधिक दुखी होना ही योगी व्यक्ति के लक्षण हैं।

।।तंविद्यात्दुखंसंयोग वियोग योग संज्ञितम्।।

।। स निश्चयेनयोगतव्योयोगोऽनिर्विण्ठाचेतरना

।।(श्रीमद्भगवद्गीता-06/23)

अर्थात् जो दुख रूप संसार के संयोग से रहित है तथा जिसका नाम योग है उसको समझना चाहिए अर्थात् दुख रूप संसार से विरक्त रहित है इस योग को धैर्य और उत्साह के साथ चित्त में धारण करना चाहिए।

कैवल्य उपनिषद में बताया गया है-

॥ **श्रद्धाभक्तिध्यानयोगादवेहि।।**

अर्थात् श्रद्धा ,भक्ति, के माध्यम से ही आत्मा का परम ज्ञान प्राप्त करना ही योग है।

सांख्य दर्शन के अनुसार-

।। पुंप्रकृत्योर्वषयोगेऽपि योग इत्यन्भधीयते।।

अर्थात् पुरुष का प्रकृति से वियोग ही योग है।

महर्षि पतंजलि के योग दर्शन के अनुसार-

।। योगश्चित: वृतिनिरोधः।।

अर्थात् अभ्यास व वैराग्य द्वारा कामना, लोभ वासना आदि को रोकना ही योग है।

बौद्ध धर्म के मतानुसार-

॥ **कुशल चितैकावगता योगः॥**

अर्थात् कुशल चित्त की एकाग्रता योग है।

उपरोक्त मत प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा में योग के स्थान एवं महत्व का वर्णन करते हैं। इन ग्रन्थों के अन्तर्गत व्यक्त की गयी ज्ञान निधि के महत्व को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में योग को औपचारिक शिक्षा के विभिन्न स्तरों के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का उद्देश्य शारीरिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, खेल, योग एवं मानसिक स्वास्थ्य को सामान्य नागरिकों तक पहुँचाना हैं।इसके अन्तर्गत स्वास्थ्य सेवा शिक्षा के पाठ्यक्रम में योग, प्राकृतिक चिकित्सा एवं आयुष प्रणाली को सम्मिलित करने की अनुशंसा व्यक्त की गयी है। इसके अतिरिक्त देश के विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों में योग एवं अन्य विषय के विभागों को बहुविषयक भारतीय शिक्षा एवं पर्यावरण सम्वर्धन हेतु विभिन्न शोध नवाचारों

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 794-799 www.ijhssm.org

को प्रोत्साहित करने हुए विशेष अनुदान अनुमोदित करने हेतु संस्तुति दी गयी है।

भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत नैतिक शिक्षा का स्थान एवं महत्व

भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत दो अति महत्वपूर्ण एवं मार्मिक सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया गया है। प्रथम- मानवीय मूल्य एवं द्वितीय- समग्रता। यहाँ मानवीय मूल्य नैतिकता, आध्यात्मिकता, कर्तव्यपरायणता एवं सत्यनिष्ठा को सन्दर्भित करते हैं, वहीं समग्रता का अभिप्राय है- एकता व समरूपता।भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत सत्यवादिता, दयालुता, निष्कपटता, सदाचार, सन्तोष एवं पारस्परिक सहयोग को नैतिकता के आधार घटक माना गया है। जिस व्यक्ति में ये गुण होंगे वह निश्चित ही नैतिकता के मानदण्ड पर सफल हो सकेगा। यही नैतिक मूल्य भारतीय ज्ञान परम्परा की अस्मिता हैं। इस सन्दर्भ में मनुस्मृति के अन्तर्गत वर्णित किया गया है कि-

।। अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।।
।। चत्वारितस्यवर्धन्तेआयुर्विद्यायशोबलम्।।(मनुस्मृति 2/121)

इस श्लोक के माध्यम से मनु यह बताना चाहते हैं कि हमेशाहमारा व्यवहार नम्रतायुक्त होना चाहिए तथा हमेशा हमें अपने से बड़ों की सेवा करनी चाहिए। यदि हम हमेशा झुकते हैं, नम्र होते हैं तो सब लोग हमारे मित्र होते हैं। सब हमारी मदद करते हैं। यदि हम बड़े-बुजुर्गों की सेवा करते हैं तो वे हमें आशीर्वाद देते हैंतथा अपना अनुभव हमारे साथ साँझा करते हैं। इस प्रकार सभी के सहयोग एवं आशीर्वाद से हमें सभी जगह सफलता प्राप्त होती है, हमारा ज्ञान बढ़ता है, हमारा जीवन खुशहाल होता है तथा हमारी आयु भी बढ़ती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा के इन्हीं मार्मिक एवं अनुकरणीय मूल्यों के महत्व को समझते हुए नीति-निर्धारकों द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत अनुशंसा व्यक्त की गई है कि शिक्षार्थी को बालपन से ही सही और गलत के मध्यउचित निर्णय लेनेका महत्व बताया जाना चाहिए। नैतिक शिक्षा जीवन का संचरण करने में, नैतिकता को अपनाने में, योग बनाने में, सही तार्किक निर्णय लेने में, नैतिक आचरण को ग्रहण करने हेतु सामर्थ्य बनाती हैं। शिक्षार्थियोंमें समझ के साथ-साथ मानवीय मूल्यों व भारतीय मूल्यों का प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार शिक्षार्थी के व्यक्तित्व में नैतिक मूल्यों को समाविष्ट करने के लिए पाठ्यपुस्तकों में भारतीय परिपाटी से पूर्ण कहानियों व कथाओं के माध्यम से उन्हें अभिप्रेरित करने पर बल दिया गया है।इस स्फ्तार भरी दुनिया में संवेदना और उदारता का पोषण करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। नैतिक शिक्षा छात्रों को विविध दृष्टिकोण, संस्कृतियों और जीवन के अनुभवों को समझने के अवसर प्रदान करती है। यह दूसरों के प्रतिअनुकंपा की भावना को बढ़ावा देती है जिससे व्यक्ति को दयालु और सहनशील व्यक्ति बनने में सहायता मिलती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में नैतिक शिक्षा के द्वारा किस प्रकार छात्रों को प्रारंभिक जीवन में नैतिकता का विकास किया जाए ताकि उनके संस्कार में जीवन पर्यन्त नैतिकता बनी रहे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का उद्देश्य इस नीति को केवल मात्र राष्ट्रीय स्तर पर लागू करना ही नहीं है अपितु राष्ट्र को प्रगति की ओर ले जाना है। शिक्षार्थियों को बाल्यकाल से ही भारतीय संस्कृति के प्रति ज्ञान युक्त श्रद्धा राष्ट्र भक्ति से प्रेरित व्यक्तियों में नैतिक शिष्टाचार की नींव को प्रतिस्थापित करना है। राष्ट्र को समृद्धि की ओर ले जाने के लिए शिक्षार्थी में आयु, विद्या, कीर्ति और बल की वृद्धि के लिए नैतिक मूल्यों को धारण करने की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में बात की गई हैं।

निष्कर्ष एवं विमर्श

प्रस्तुत शोध विश्लेषण से यह निष्कर्षित किया जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा, योग शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले विषय हैं, जो कि मनुष्य के जीवन में आने वाली चुनौतियों एवं बाधाओं से निपटने हेतु निर्देशन एवं परामर्श में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत

विस्तारपूर्वक यह मंत्रणा की गयी है कि किसी भी राष्ट्र के बच्चे कोमल कलियों के समान हीकोमल एवं भविष्य में खिलने वाले पुष्प हुआ करते हैं। इसलिए आज और कल उन्हीं का होता है। किसी भी राष्ट्र के भविष्य का विकास उस राष्ट्र के बच्चों पर निर्भर करता है जिस कारण शिक्षक के साथ-साथ बच्चों को भी राष्ट्र का निर्माता व भाग्य कहा जाता हैं।अतएव आधुनिक भारतवर्ष की वर्तमान पीढ़ी के समुचित एवं संतुलित विकास हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान निधि की योग एवं मूल्य परख शिक्षा को पाठ्यचर्या के अन्तर्गत वैकल्पिक विषय न मानते हुए अनिवार्य विषय के रूप में सम्मिलित करने की अनुसंशा व्यक्त की गयी है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा के महान वाहक एवं विचारकों ने अपने दार्शनिक विचारों एवं स्वधर्म द्वारा समय-समय पर भारतीय जनमानस को शिक्षित करने का कार्य किया है, जो आज भी अनुकरणीय है।इसी श्रृंखला में ज्ञान के अनुशीलन में गुणवत्तायुक्त शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को प्रस्तुत किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के माध्यम से भारतवर्ष की वर्तमान एवं भावी पीढ़ी में इन्हीं विचारकों के नैतिक शिक्षा मूल्यों के आत्मबोध के साथ-साथ व्यावहारिक जीवन में इन्हें कार्यान्वित करते हुए धरातलीय स्तर पर इनका अनुप्रयोग कारण इसका अभीष्ट उद्देश्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है' की भावना से योग एवं मूल्यपरख शिक्षा की जो रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है उसके कार्यान्वयन से शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ, सक्षम एवं ओजस्वी नागरिक तैयार हो सकेंगे। इन युवाओं के शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं द्वारा देश विकास के नवीन आयामों को प्राप्त कर सकेगा तथा निश्चित रूप से भारत एक समग्र, सृजनशील, सन्तुलित, समावेशी एवं सतत विकास लक्ष्यों को भी प्राप्त करने में सफल हो सकेगा।

सन्दर्भ सूची

- Sirola, Sagar Singh. (2024). शोध नवोन्मेष कार्य (लघुशोध प्रारूपिका) क्रमांक 010 : भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुपालन में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित शिक्षा दर्शन का राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन (Analytical Study of the Education Philosophy Contained in Sri Guru Granth Sahib in the context of National Education Policy-2020 in Compliance with the Indian Knowledge System). 10.13140/RG.2.2.23180.53121.
- Sirola, Sagar Singh & Sirola, Debaki. (2024). शोधालेख (शोधपत्र) क्रमांक 009 : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एवं सतत विकास हेतु शिक्षा (NEP 2020 and Education for Sustainable Development). University of Bohol Multidisciplinary Research Journal. 19. 17-21.
- Sirola, Debaki & Sirola, Sagar Singh. (2024). शोधालेख (शोधपत्र) क्रमांक 007 : भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (Indian Knowledge System and New Education Policy-2020). International Journal For Multidisciplinary Research. Volume 6. 10.36948/ijfmr.2024.v06i02.15952.[1]
- मौर्य, धर्मेन्द्र कुमार एवं बिष्ट प्रो0 पुष्कर सिंह (2022), "राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में शारीरिक शिक्षा, योग एवं खेल आधारित शिक्षा की संकल्पना : समीक्षा एवं क्रियान्वयन हेतु सुझाव"Vimarshodgam Journal of Interdisciplinary Studies (VIMJINS), ISSN : 2583-228X, Volume-02, Number-01, P.N. 83-89.
- द्विवेदी डॉ0 लक्ष्मीधर एवं गोस्वामी डॉ0 प्रदीप कुमार (2021), "चरक संहिता", चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी- 37/118,गोपाल मन्दिर लेन-ए,गोलघर, वाराणसी (उ0प्र0)
- श्रीमद्भगवद्गीता (2020), प्रकाशक एवं मुद्रक गीताप्रेस, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)।

अन्य इन्टरनेट उद्धरण-

[1]. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/नई_शिक्षा_नीति_2020
[2]. https://www.education.gov.in/
[3]. https://www.researchgate.net/publication/381126831_sodhalekha_sodhapatra_kramanka_009_rastriya_siksa_niti-2020_evam_satata_vikasa_hetu_siksa_NEP_2020_and_Education_for_Sustainable_Development/citation/download
[4]. https://www.researchgate.net/publication/381805818_sodha_navonmesa_karya_laghusodha_prarupika_kramanka_010_bharatiya_jnana_parampara_ke_anupalana_mem_sri_guru_granthа_sahiba_mem_nihita_siksa_darsana_ka_rastriya_siksa_niti-2020_ke_sandarbha_mem_vislesa/citation/download
[5]. https://www.researchgate.net/publication/379757806_sodhalekha_sodhapatra_kramanka_007_bharatiya_jnana_parampara_evam_rastriya_siksa_niti-2020_Indian_Knowledge_System_and_New_Education_Policy-2020